1

Decline of Political Theory

डेविड ईस्टन ने 1950 के दशक में ही अपने एक महत्वपूर्ण लेख 'The Decline of Modern Political Theory" के द्वारा इस विवाद की शुरुआत कर दी थी कि राजनीतिक सिद्धान्त का ह्रास हुआ है और हो रहा है। उनके अनुसार समसामयिक राजनीतिक सिद्धान्त शताब्दियों पुराने विचारों का आधार लिए हुए हैं और इसने कोई नया राजनीतिक संश्लेषण विकसित नहीं किया है।

ईस्टन का तर्क कई बिन्दुओं पर आधारित है। सर्वप्रथम अब अनुकूल परिस्थितियों का अभाव हो गया है। राजनीतिक विचार सामाजिक संघर्ष और परिवर्तन की जमीन में पैदा होता है फलता फूलता है। अब चूंकि सामाजिक राजनीतिक उथल-पुथल नहीं हो रही है इसलिए राजनीतिक सिद्धान्त का पतन हो रहा है।

राजनीतिक सिद्धान्त के ह्रास का एक और कारण इस विषय को इतिहास के अध्ययन के बहुत निकट ले आने में देखा जा सकता है। सेबाइन, डनिंग जैसे लेखकों ने पश्चिम विश्व के इतिहास के सन्दर्भ में राजनीतिक सिद्धान्त और उनके विकास का अध्ययन किया। इनकी रचनाओं के गहन अध्ययन से पता चलता है कि उन्हें नये मूल्य सिद्धान्त के विश्लेषण और निर्माण करने के

निर्णय लेने की अपेक्षा पुराने राजनीतिक मूल्यों को ऐतिहासिक विकास एवं आन्तरिक अभिप्राय के बारे में जानकारी को बनाए रखने के विचार से अधिक प्रेरणा मिलती है।

फिर इस्टन मूल्यों के महत्व को अस्वीकार करता है। मूल्य विहिन अध्ययन की प्रवृत्ति को व्यवहारवाद की उपज थी, उसने भी राजनीतिक सिद्धान्त के ह्रास को बढ़ावा दिया है।

इस्टन के समान ही कोबां ने भी राजनीतिक सिद्धान्त के ह्रास की पहचान की है। कोबां ने भी कहा है कि समसामयिक राजनीतिक सिद्धान्त प्रगतिशील विज्ञान नहीं है और यह अपने आपको भी नयी परिस्थितियों के प्रकाश में सुधार नहीं पाया है। कोबां के अनुसार लोकतांत्रिक प्रणाली की सफलता एक अर्थ में राजनीतिक सिद्धान्त के ह्रास का कारण है प्रजातांत्रिक समाज में लोग अपनी परिस्थितियों से संतुष्ट रहने लगते हैं इसके कारण राजनीतिक जीवन प्रायः समाप्त हो जाता है।

इस प्रकार, इस्टन के शब्दों में, "समसामयिक राजनीतिक विचार एक शताब्दी पुराने विचारों पर परजीवी के रूप में जीवित है और सबसे हतोत्साहित बात यह है कि हमने राजनीतिक संश्लेषणों के विकास की कोई सम्भावना

नहीं दिखते देखते। ऐसा कहा जाता है कि समाज विज्ञान किसी नए अरस्तु या किसी नये न्यूटन का इंतजार कर रहे हैं। यदि राजनीतिक सिद्धान्त के लिए वर्तमान सम्भावनाओं आने वाली घटनाओं के वास्तविक मोड़ की द्योतक है, तो इस प्रकार का इंतज़ार बेकार है, क्योंकि हम ऐसी भूमि तैयार नहीं कर रहे हैं जिसमें क्रान्तिकारी रचनात्मक चिन्तन उत्पन्न हो।"

किन्तु, उल्लेखनीय है कि बर्लिन एवं ल्योडेस जैसे लेखकों का मानना है कि राजनीतिक सिद्धान्त का ह्रास नहीं कहा जा सकता है और इसके पुनरुत्थान की सम्भावना है।

बर्लिन के अनुसार उदारवादी समाज में राजनीति का अंत नहीं हो सकता क्योंकि दो विरोधी विचारधारा में आपस में टक्कर होते रहता है। इस तरह राजनीति सिद्धान्त कभी अपना अंत नहीं देख सकता।

साथ ही ल्योडेस के अनुसार उत्तर-व्यवहारवादी काल में मूल्यों की पुनर्स्थापना हो गई है और राजनीतिक सिद्धान्त का विकास हो रहा है।

अतः कहा जा सकता है कि राजनीतिक सिद्धान्त का अन्त नहीं हो तो नहीं हुआ है। यदि इसके ह्रास के कुछ लक्षण है तो उत्तर-व्यवहारवादी काल में इसके पुनरुत्थान की भी आशाएँ हैं।